Dr. Guddy Kumari

(Guest lecturer)

History Dept.

A.N.D. College, Patory (Samastipur)

B.A.(H) Part-I, History

LECTURE - 5.

इस PDF का Audio or videos देखने के लिए नीचे लिखे लिंक को follow करें □□□

https://youtu.be/q2ux2T4xNRA

मौर्य साम्राज्य के पतन के प्रमुख कारण

भारतीय इतिहास में मौर्य युग का इतिहास गौरवपूर्ण है। मौर्य युग में प्रथम बार भारत को सशक्त राजनैतिक एकता से बाँधने का प्रयास किया गया। भारत को चन्द्रगुप्त मौर्य जैसे सम्राट्, चाणक्य जैसे कूटनीतिज्ञ तथा सम्राट् अशोक जैसे लोक कल्याणकारी शासक मिले। मौर्य युग से ही भारत के क्रमबद्ध राजनैतिक इतिहास का प्रारम्भ होता है। मौर्य युग में धर्म, दर्शन, साहित्य, कला इत्यादि के क्षेत्र में अनेक कीर्तिमान स्थापित हुए।

अशोक की मृत्यु(232 ई.पू.) के बाद ही मौर्य साम्राज्य के पतन के लक्षण स्पष्ट होने लगे। केंद्रीय सत्ता कमजोर हो गई और अशोक के उत्तराधिकारियों में से कोई भी ऐसा सक्षम नहीं निकला जो पुराने मौर्य साम्राज्य को संगठित और सबल रख सके। अन्य साम्राज्यों की तरह मौर्य साम्राज्य का पतन भी ना अचानक था और ना किसी एक ही कारण से घटित हुआ।साम्राज्य के पतन के मूल कारण निम्नलिखित थे:–

1. अयोग्य एवं निर्बल उत्तराधिकारी:–

राजतंत्रात्मक शासन का स्थायित्व राजा की योग्यता और उसके व्यक्तित्व पर निर्भर करता है। चंद्रगुप्त मौर्य, बिंदुसार और अशोक शक्तिशाली तथा कर्मठ शासक थे। और उन लोगों के समय

Dr. GUDDY KUMARI (A.N.D COLLEGE)

मौर्य साम्राज्य सुचारू रूप से चलता रहा। अशोक के पश्चात कोई और योग्य शक्तिशाली मौर्य शासक नहीं हुआ जिसके फलस्वरुप केंद्रीय सत्ता कमजोर हो गई। उसके उत्तराधिकारियों की निर्मलता का लाभ उठाकर मौर्य साम्राज्य के दूरस्थ पर देशों ने अपनी स्वतंत्रता घोषित कर दी। कल्हण के आधार पर हम कह सकते हैं कि अशोक की मृत्यु के बाद उसके पुत्र जलौक ने कश्मीर को स्वतंत्र राज्य घोषित कर दिया। तारानाथ के विवरणों से ज्ञात होता है कि वीरसेन नामक एक व्यक्ति ने गंधार में स्वतंत्र राज्य की स्थापना की। कालिदास के मालविकाग्निमित्रम् से स्पष्ट है कि विदर्भ एक स्वतंत्र राज्य हो गया था। इस तरह राज्यों का स्वतंत्र होना निर्बल एवं अयोग्य उत्तराधिकारियों के शासन के परिणाम थे।

2. प्रजा का शोषण एवं उनका विद्रोह:–

अशोक की मृत्यु के बाद जहाँ एक ओर स्वतंत्र राज्यों के निर्माण की होड़ सी लग गई थी। वहीं दूसरी ओर प्रांतीय शासक केंद्रीय सत्ता की कमजोरी से लाभ उठाकर मनमाने ढंग से शासन कर रहे थे और जनता का बुरी तरह शोषण कर रहे थे। प्रांतीय शासकों के अत्याचारी शासन से ऊब कर ही जनता समय–समय पर विद्रोह करती थी। अशोक के समय भी तक्षशिला में इस प्रकार का एक विद्रोह हुआ था। अशोक का अभिलेख इस बात का प्रमाण है कि प्रांतीय शासक जनता को तंग किया करते थे। उनकी अत्याचारी नीति ही मौर्य साम्राज्य के प्रति प्रांतों में अश्रद्धा की भावना उत्पन्न कर दी थी। जिसका फल अशोक के बाद देखने को मिला। तक्षशिला कलिंग उज्जैन आदी प्रांत अशोक के बाद स्वतंत्र हो गए थे। प्रांतीय शासक ही नहीं वरन् अशोक के उत्तराधिकारियों में शालिशूक भी बड़ा अत्याचारी था। राज्यसभा की गुटबंदियों ने भी राजसत्ता को शिथिल, विवश, संकटग्रस्त और अनादरणीय कर दिया था।

3. करो की अधिकता:–

मौर्य साम्राज्य के पतन का एक प्रमुख कारण मौर्य शासकों द्वारा करो में अधिक वृद्धि भी थी। पतंजलि के अनुसार मौर्य शासकों ने धन संग्रह के लिए जो साधन अपनाएं वह सर्वथा अनुचित थे। उस समय जनता की श्रद्धा–भक्ति जागृत कर उस माध्यम से लोग पैसे बटोरते थे। इतने बड़े साम्राज्य के लिए धन की अत्यधिक आवश्यकता थी इसीलिए तरह–तरह के कर लगाए जाते थे। इससे जनता पर करों का बोझ बढ़ता गया और जनता में असंतोष उत्पन्न हुआ। इधर अशोक की दानशीलता से राजकोष भी खाली हो गया था। इस तरह अशोक के मृत्यु के बाद राज्य में अनिश्चितता की स्थिति उत्पन्न हुई और प्रांत स्वतंत्र होने लगे। उस से राज्य की आय में और भी कमी हो गई। व्यापार को बहुत धक्का लगा। इस तरह धनाभाव में साम्राज्य का पतन निश्चित था।

Dr. GUDDY KUMARI (A.N.D COLLEGE)

4.मौर्य साम्राज्य का विकेंद्रीकरण एवं विदेशी आक्रमण:–

अशोक के मृत्यु के बाद मोर्य दरबार षड्यंत्रों का अड्डा बन गया। तक्षशिला कलिंग उज्जैन गंधार जैसे अनेक सीमा प्रांत प्रदेश स्वतंत्र हो गए। तीसरी शताब्दी ईसा पूर्व के अंत में काबुल की घाटी सुभाग सेन नामक एक राजा के अधीन थी, जो मौर्य साम्राज्य के भग्नावशेष पर शक्तिशाली बना था। वह एक स्वतंत्र शासक था। साम्राज्य के विघटन ने बाह्य आक्रमणकारियों को भी आमंत्रित किया। पोलिबियस के अनुसार एंटियोकस तृतीय ने भारत पर आक्रमण किया और इसमें उसे सुभाग सेन से काफी सहायता मिली। बाण के आधार पर यह कहा जा सकता है कि अंतिम मौर्य शासकों ने सैनिक से संपर्क रखना छोड़ दिया था। मौर्य परिवार के लोगों ने सम्राज्य के छिन्न–भिन्न होने में सहायता ही की थी। जिसके कारण सेनापति पुष्यमित्र ने बड़ी आसानी से 184 बी सी में बृहद्रथ को मारकर गद्दी पर अधिकार कर लिया और इस तरह मोर्य साम्राज्य का पतन हो गया।

5. ब्राह्मण वर्ग का विरोध:–

श्री हरि प्रसाद शास्त्री ने अपने एक लेख में अशोक की नीति को ब्राह्मण विरोधी कहा है और इसे ही मौर्य साम्राज्य के पतन का मुख्य कारण माना है। पशु बलि के विरुद्ध अशोक की राजाज्ञा से ब्राह्मण बिगड़ उठे थे। अशोक की नीति से भी ब्राह्मण अपने को अपमानित समझ रहे थे और 'समता' (व्यवहार समता और दंड समता) संबंधी अशोक की आज्ञा से यह लोग पीड़ित थे। शास्त्री जी का कथन है कि अशोक मर गया, तब ब्राह्मणों ने इन्हीं कारणों के चलते उसके उत्तराधिकारियों का विरोध किया और इसी कारण आज साम्राज्य का पतन हुआ।

6. दक्षिण–पश्चिम प्रदेशों का विघटन:–

अशोक की मृत्यु के 25 वर्ष के अंदर ही यूनानी फौजें हिंदू कुश पर्वत को पार करने लगे थीं। हिंदूकुश अशोक के साम्राज्य की सीमा थी। अशोक के बाद मौर्य साम्राज्य पर सबसे पहला यूनानी आक्रमण एंटीयोगास ने ही ईसा पूर्व 206 में किया था। गार्गी संहिता के युग पुराण के अनुसार शालिशूक के शासन के बाद मध्य प्रदेश में मौर्यों का पतन होने लगा था। मौर्य साम्राज्य के दूरस्थ प्रांतों का नियंत्रण उन दिनों इतना आसान नहीं था और आए दिन प्रांतों में विद्रोह और पश्चिमोत्तर सीमा प्रांत पर यवनों के आक्रमण होते ही रहते थे। इससे स्पष्ट है कि ईसा पूर्व 206 में दक्षिण पश्चिम में मौर्य साम्राज्य का विघटन आरंभ हो गया था।

Dr. GUDDY KUMARI (A.N.D COLLEGE)

7. मौर्य साम्राज्य के पतन में अशोक का दायित्व:– जो विद्वान अशोक को साम्राज्य के पतन का कारण मानते हैं, उनका कहना है कि–

@ अशोक ने साम्राज्य विस्तार के स्थान पर शांति अहिंसा और धर्म विजय की नीति अपनाई।

@ सैनिक शक्ति का ह्रास हुआ।

@ साम्राज्य ब्राह्मण प्रतिक्रिया का शिकार हो गया।

@ धर्म प्रचार में लगे रहने के कारण उसका शासन दुर्बल हो गया।

@ विकेंद्रीकरण की प्रवृत्ति बढ़ने लगी।

@ दानशीलता के कारण कोष खाली हो गया।

@ पतन का एक कारण शासन का अत्यधिक केंद्रीकरण ही था।

@ धम्म घोष से युद्ध की कला में लोग निपुण नहीं रहे–– और इन्हीं सब कारणों से मोर्य साम्राज्य का पतन हुआ।

8. यातायात के साधनों के अभाव भी मौर्य साम्राज्य के पतन के एक मुख्य कारण थे क्योंकि यातायात साधनों के अभाव में इतने दिनों तक इतने बड़े साम्राज्य को एक सूत्र में बांध कर रखना असंभव था।

निष्कर्षत: हम यह कह सकते हैं कि कमजोर उत्तराधिकारी, केन्द्रीय सत्ता का अभाव, प्रांतीय शासकों का अत्याचार, करों की अधिकता, विदेशी आक्रमण तथा देश में राष्ट्रीय भावना का अभाव और अशोक की नीति मौर्य साम्राज्य के पतन प्रमुख कारण थे।

::::::::::::::::::::::::::::::::::धन्यवाद:::

Dr. GUDDY KUMARI (A.N.D COLLEGE)